बुन्देलीधारा के अनखुले पृष्ठ

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

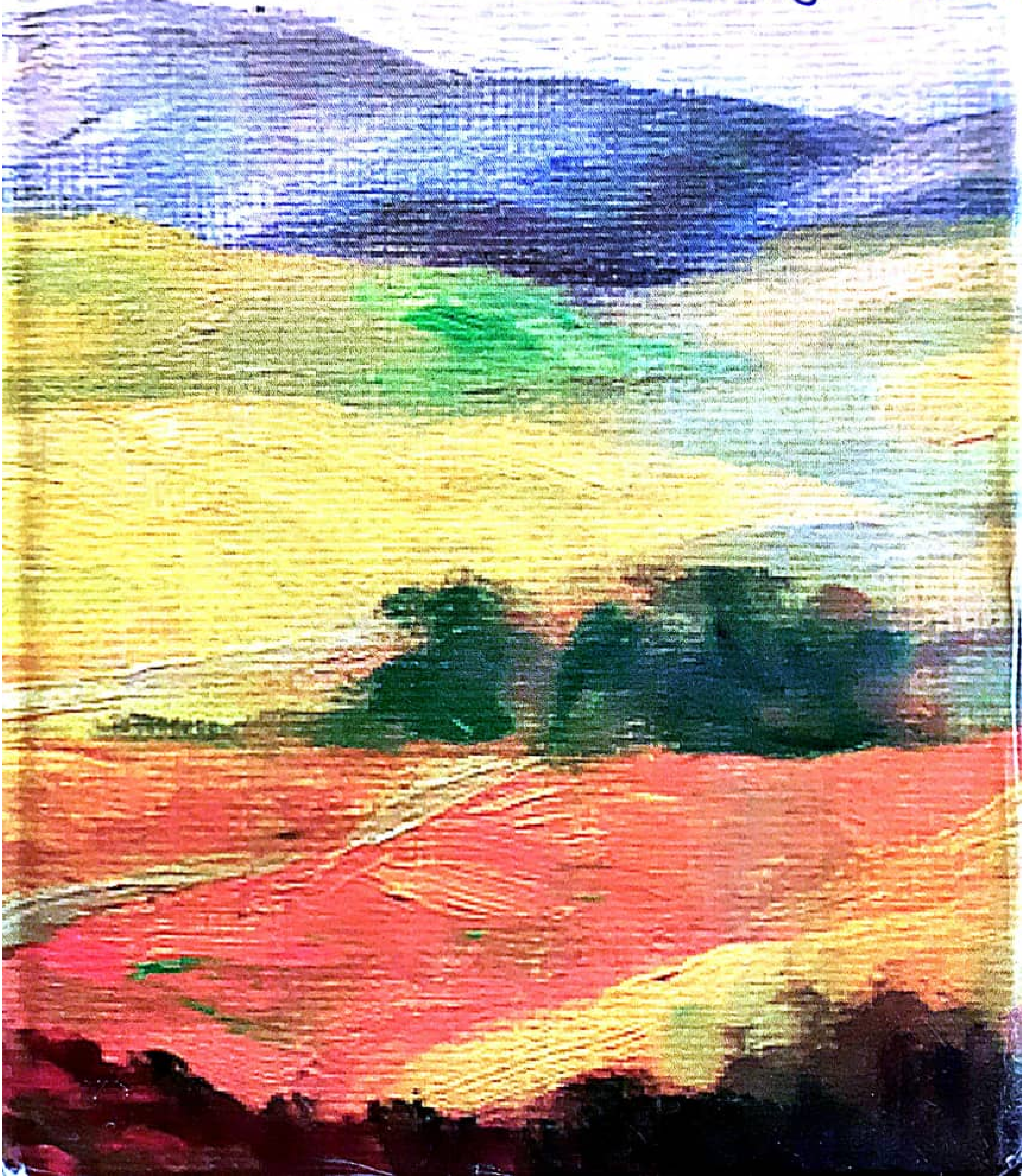

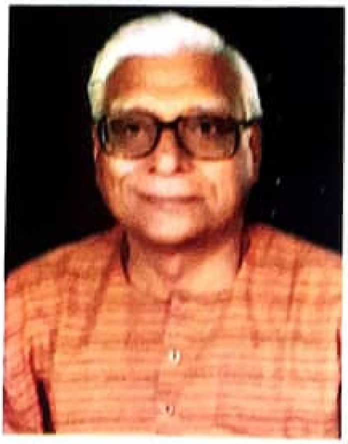

नाम : डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'
जन्म स्थान: भौंरी (जिला बांदा–अब चित्रकूट, उ0प्र0)।
जन्मतिथि : 6 फरवरी, 1937।
सेवा : म0प्र0 के शासकीय महाविद्यालयों में व्याख्याता, प्राध्यापक, प्राचार्य। स्नातकोत्तर प्राचार्य पद से 31–12–1996 को सेवानिवृत्त।
योग्यता : एम.ए. (हिन्दी), पी.एच–डी. (सन्–1964) जबलपुर विश्वविद्यालय, विषय– हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार।
कृतियाँ : (1) हिन्दी साहित्य में व्यक्तिवादी निबंध और निबंधकार, (2) छत्तीसगढ़ का साहित्य और उसके साहित्यकार, (3) आधुनिक काव्य : संदर्भ और प्रकृति, (4) हिन्दी के प्रमुख एकांकी और एकांकीकार, (5) बुन्देलखण्ड के अज्ञात रचनाकर (शोध निबंधों का संग्रह), (6) चिंतन– अनुचिंतन (समीक्षात्मक निबंध), (7) हिन्दी का प्रथम अज्ञात सुदामा चरित्र (संपादन), (8) वीर विलास (आल्हा संबंधी प्राचीनतम पांडुलिपि) (संपादन), (9) अरमान वर पाने का (व्यंग्य लेखों का संग्रह), (10) निंदक नियरे राखिये (व्यंग्य लेखों का संग्रह), (11) अथ काटना कुत्ते का भइया जी को (व्यंग्य संग्रह), (12) कर्म और आराधना (चिंतनपरक आलेख), (13) रचना से रचना तक (समीक्षात्मक लेखों का संग्रह), (14) तुलसी के तेवर, (15) रस विलास (संपादन), (16) मेरी जन्मूभूमि : मेरा गाँव, (17) कभी–कभी यह भी (काव्य संग्रह), (18) नारी : एक अध्ययन, (19) बुंदेली : एक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन (संपादन), (20) मानस मनीषा (संपादन), (21) रूपक और साक्षात्कार, (22) विंध्यालोक (संपादन), (23) लोक वाटिका, (24) शब्दों के रंग : बदलते प्रसंग, (25) रचना अनुशीलन (समीक्षा), (26) सृजन–विमर्श (समीक्षा), (27) खरी–खरी (काव्य), (28) संवाद : साहित्यकारों से, (30) मध्यकालीन काव्य, (31) बुन्देलखण्ड का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य, (32) बुन्देलीधारा के अनखुले पृष्ठ, (33) छत्तीसगढ़ की साहित्यिक विभूतियाँ।

बुन्देलीधारा के अनखुले पृष्ठ

डॉ० गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैंया'

आरती प्रकाशन

इलाहाबाद

ISBN : 978-93-84307-00-4

प्रकाशक : **आरती प्रकाशन**
364, आवास विकास कालोनी, यो0-2
झूँसी, इलाहाबाद (उ.प्र.) 211 019

लेखक : **डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त 'बरसैया'**

संस्करण : 2015

मूल्य : 225.00 रु0 (दो सौ पच्चीस रुपये मात्र)

मुद्रक : **भार्गव आफसेट**
बाई का बाग, इलाहाबाद

Bundelidhara Ke Ankhule Pristh : By Dr. Ganga Prasad Gupta
बुन्देलीधरा के अनखुले पृष्ठ : द्वारा डॉ0 गंगाप्रसाद गुप्त

अनुक्रमणिका

1. दो शब्द : संग्रह के उद्देश्य पर 7–8
2. सत्य की कुंजी : खुलासा 9–21
3. अज्ञात कवि वृन्दावनदास और उनका रामचरितावली महाकाव्य 22–29
4. विलक्षण प्रतिभा के धनी : नारायणदास 'बौखल' 30–44
5. साहित्य–सागर के रचयिता राजकवि आचार्य बिहारी भट्ट 45–50
6. असाधारण काव्य–प्रतिभा के धनी राममनोहर ब्रजपुरिया 'सम्राट' 51–55
7. काव्य–भूषण रामनाथ गुप्त 'हरिदेव' 56–60
8. आदर्श और यथार्थ के संवाहक : रामनाथ नीखरा 61–67
9. अज्ञात कवि देवीदयाल गुप्त 68–73
10. स्वतंत्रता संग्राम के बलिदानी वीर : शहीद सेठ सुन्दरलाल ददरया (गिलौहावाले) 74–77
11. लोक साहित्य : साँची संजीवनी 78–82
12. बुन्देली नाटिका– मों देखी पंचात 83–94
13. छरतपुर जिले में मेलों की परम्परा 95–103
14. छतरपुर जनपद की रामलीला–परम्परा 104–111

OO

दो शब्द : संग्रह के उद्देश्य पर

मेरे पूर्व प्रकाशित ग्रंथ 'बुन्देखण्ड के अज्ञात रचनाकार' की साहित्य-जगत् में बहुत अच्छी उत्साहवर्द्धक चर्चा रही, आज भी हो रही है। उसके दो संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इसी बीच मुझे जो भी सामग्री मिलती रही, वह पत्र-पत्रिकाओं में आलेखों के रूप में समय-समय पर प्रकाशित होती रही। वर्षों से मित्रों का आग्रह रहा है कि पूर्व ग्रंथ की तरह अज्ञात रचनाकारों का एक नया संग्रह प्रकाशित किया जाय किन्तु न तो मेरे पास ग्रंथ के लायक पर्याप्त सामग्री रही और न ही बढ़ती आयु और बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण मुझमें पहले जैसी क्षमता रही कि यहाँ-वहाँ जाकर, दौड़-धूपकर सामग्री की खोज करूँ। वैसे भी मेरे कुछ मित्र मुझे खंडहर-खोद साहित्यकार कहते हैं। उनका यह भी मानना है कि इक्कीसवीं शताब्दी में इन पुरानी पांडुलिपियों-कृतियों में सिर खपाने से क्या लाभ। मैं लाभ के लिए नहीं, आनन्द के लिए यह सब कार्य करता हूँ। मुझे इसमें सुख मिलता है। यह दुखद है कि तमाम साधन होते हुए भी ऐसे तमाम साहित्यकारों तक हमारी दृष्टि नहीं गई जो बेचारे बस्तों में बँधे घरों के कोने-कोतरे में पड़े हैं। यही नहीं, इस वैज्ञानिक अर्थप्रधान युग की मानसिकता ने वैसे भी साहित्य के प्रति आकर्षण बहुत कम कर दिया है। इसीलिए युग को प्रभावित करने वाली कालजयी कृतियाँ बहुत कम सामने आ पाती हैं। शोध की दुर्दशा के बारे में जितना भी कहा जाय कम है।

यह बात बार-बार दोहराने की नहीं है कि बुन्देली धरती साहित्य और संस्कृति की दृष्टि से बहुत समृद्ध है। यहाँ का लोकसाहित्य विविधवर्णी सम्पदा से भरपूर है। प्राचीन परम्पराएँ भले ही क्षीण हो रही हों, परन्तु यहाँ का लोकसाहित्य अभी जीवंत है। उसमें साहित्य को ऊर्जा देने की अद्भुत शक्ति है। इसी प्रकार साहित्य-सृजन की परम्परा भी हजारों वर्ष प्राचीन है। इस परम्परा से जुड़े कुछ

कृतिकारों को तो पहचाना गया किन्तु अभी भी कुछ बहुत सी प्रतिभायें अनपहचानी पड़ी हैं। इन्हें उद्धारकों की प्रतीक्षा है।

इस संग्रह में कुछ ऐसे ही रचनाकारों को स्थान दिया गया है जिन्हें अभी तक पहचाना नहीं गया अथवा ठीक से पहचानना बाकी है। प्रणामी सम्प्रदाय के पुरस्कर्ता स्वामी प्राणनाथ ने अपने सामाजिक अभियान और सर्जना से सामाजिक चेतना और साम्प्रदायिक भेदभाव से ऊपर उठकर परस्पर समता, बन्धुता और एकता का संदेश दिया। राष्ट्रीय भावना की चेतना जगाई। छत्रसाल जैसे योद्धा को दायित्व का बोध कराकर राष्ट्रीयता से जोड़ा। उन्होंने जीवन और जगत् के सत्य को उजागर किया। 'खुलासा' उनकी ऐसी ही एक कृति है। नारायणदास बौखल दलित परिवार में जन्म लेकर भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रियता से भाग लिया, जेल की यातनायें सहीं और हजारों पदों और दोहों की रचना की। उनके कई पद कबीरदास से टक्कर लेते हैं। उनके दो संग्रह भी प्रकाशित हैं किन्तु किसी ने उनकी सुध न ली। वृन्दावनदास द्वारा रचित ग्रंथों की संख्या 36 है। तीन महाकाव्य हैं। पहली बार उनका परिचय मैंने ही प्रकाशित कराया था। आचार्य बिहारी रीति काव्य के अंतिम आचार्य हैं जिन्होंने 'साहित्य-सागर' जैसा सर्वांग निरूपक काव्यशास्त्र संबंधी ग्रंथ लिखा। राममनोहर ब्रजपुरिया ने 'बिहारी सतसई के दोहों का कवित्त-सवैयों में भावानुवाद करके लगभग एक सौ वर्ष पूर्व अपनी प्रतिभा का परिचय दिया था। रामनाथ नीखरा ने प्रवीणराय और परशुराम पर उपन्यास लिखे किन्तु कहीं उल्लेख नहीं। 'हरिदेव' के कवित्त बहुत उच्चकोटि के हैं। देवीदयाल गरीबी का अभिशाप झेलकर भी लिखते रहे। ऐसे साधक साहित्यकारों की थोड़ी सी झलक इस संग्रह में मिलेगी। बुन्देली व्यंग्य, बुन्देली लोककथा के मेला और रामलीला-परम्परा संबंधी लेख इसलिए दिया ताकि यहाँ की भाषा, संस्कृति की थोड़ी बानगी पाठकों को मिल सके। इसीलिए संग्रह को नाम दिया है 'बुन्देलीधरा के अनखुले पृष्ठ'।

आशा है इससे पाठकों को बुन्देलखंड के क[illegible]कारों की नई जानकारी प्राप्त होगी। संग्रह का प्रकाशन परिजनों के सहयोग और प्रकाशक मित्र के आग्रह का सुपरिणाम है। उन सभी को धन्यवाद।

—डॉ0 गंगाप्रसाद बरसैंया

शोध निर्देशन : 12 शोध छात्रों को मेरे निर्देशन में पी.एच–डी. की उपाधि प्राप्त।

लघु शोध प्रबंध : लगभग 30 लघुशोध प्रबंध निर्देशन में प्रस्तुत।

संपादन : 'नव–ज्योति', 'राष्ट्रगौरव', 'संज्ञा' व 'बंधु' पत्रिकाओं का संपादन।

सम्मान–पुरस्कार–अलंकार :

1. महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ0 शंकरदयाल शर्मा द्वारा अ0भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन की 'साहित्य श्री' उपाधि से सम्मानित तथा सम्मेलन द्वारा सर्वोच्च राष्ट्रीय अलंकरण 'भारत भाषा भूषण' व सरस्वती सम्मान ।

2. म0प्र0 लेखक संघ भोपाल का डॉ0 संतोष तिवारी समीक्षा सम्मान व पुरस्कार 2005 में म0प्र0 के महामहिम राज्यपाल डॉ0 बलराम जाखड़ द्वारा अलंकृत।

3. कादंबिनी क्लब जबलपुर म0प्र0 द्वारा अखिल भारतीय 'सेठ गोविंददास पुरस्कार' से अलंकृत।

4. अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'साहित्य वारिधि' अलंकार।

5. लोक मंगल एवं लोक संस्कृति सेवा निधि ट्रस्ट, उरई, उ0प्र0 द्वारा 'गौरीशंकर द्विवेदी अलंकरण' एवं पुरस्कार।

6. बांदा जनपद का 'तुलसी पुरस्कार' तथा 'सार्वजनिक अभिनंदन ।

7. वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद, टीकमगढ़ द्वारा 'बुंदेल वारिधि' सम्मान।

8. बुंदेली विकास संस्थान, बसारी म0प्र0 द्वारा 'राव साहब बुंदेला' सम्मान।

9. हिन्दी प्रचारिणी सभा, कानपुर उ0प्र0 द्वारा 'साहित्य भारती' से अलंकृत।

10. अ0भा0 भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा 'विद्रोही' पुरुस्कार से पुरस्कृत।

11. लायंस क्लब छतरपुर द्वारा 'छतरपुर गौरव' सम्मान।

12. आकाशवाणी छतरपुर की सलाहकार समिति के पूर्व सदस्य।

13. रामायण ट्रस्ट अयोध्या उ0प्र0 द्वारा 'पं0 रामकिंकर' सम्मान।

14. ओरछा महोत्सव व केशव जयंती समारोह समिति द्वारा 'मित्र मिश्र अलंकरण' एवं पुरस्कार।

प्रशासनिक अनुभव :

(1) 40 वर्षों तक हिन्दी के आचार्य, विभागाध्यक्ष एवं स्नातक व स्नातकोत्तर प्राचार्य, (म0प्र0 शासन के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत महाविद्यालीन सेवा)

(2) दो वर्ष तक महाकवि केशव अनुसंधान केन्द्र ओरछा (रीवा वि0वि0) के संचालक (डायरेक्टर)।

स्थायी निवास : 12, एम.आई.जी., चौबे कॉलोनी, छतरपुर, म0प्र0 – 471001

दूरभाष : 07682–241024,
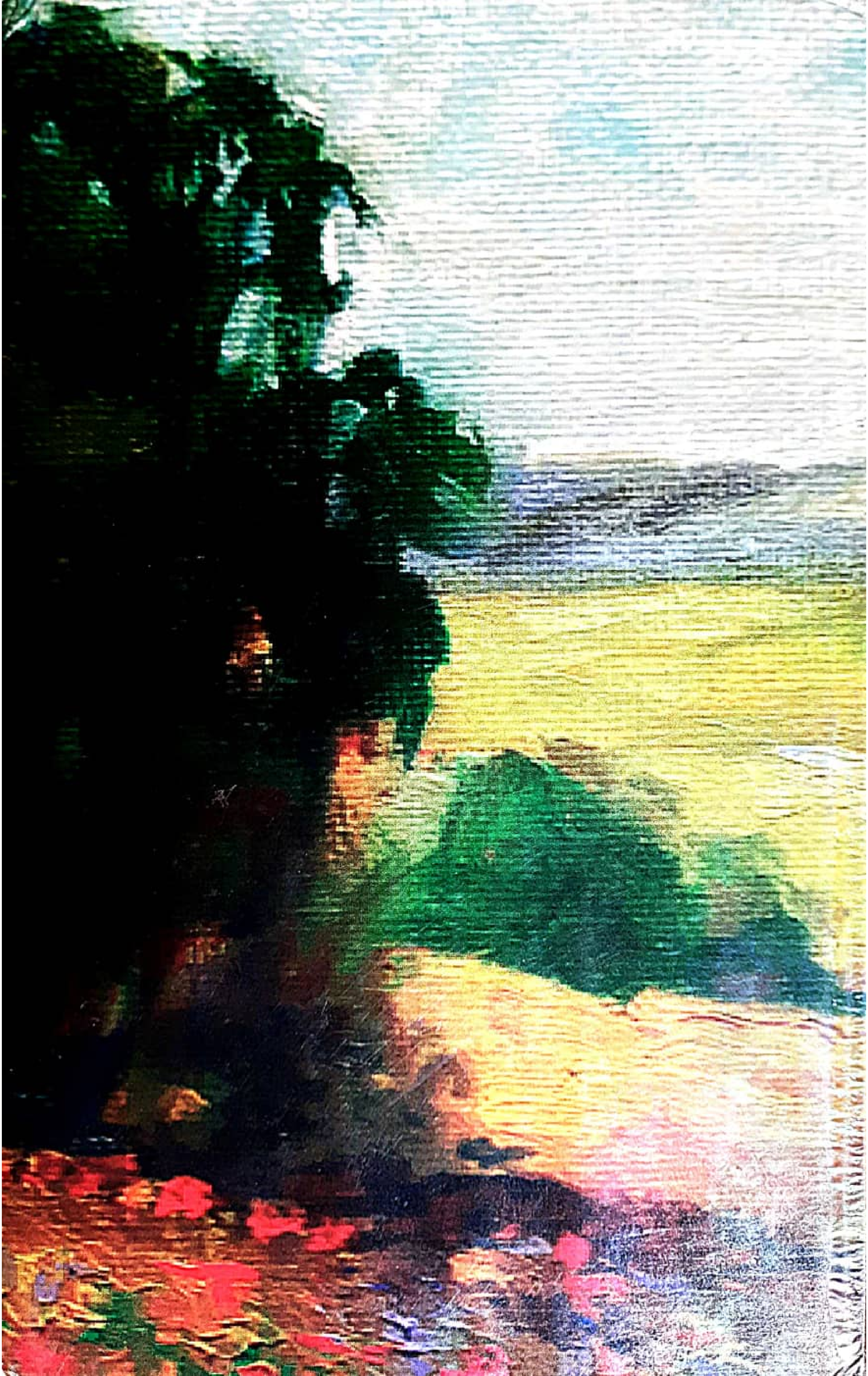
मोबाइल : 9425376413